जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

यदि सही दिशा में पुरुषार्थ किया जाये तो प्रत्येक आत्मा परमात्मा बन सकता है।

ह्न मैं कौन हूँ ? पृष्ठ : 51

वर्ष : 27, अंक : 13 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अक्टूबर (प्रथम)2004 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

सम्पूर्ण भारतवर्ष में पर्वाधिराज पर्यूषण पर्व धूमधाम से मनाया गया

पर्वाधिराज पर्यूषण पर्व दिनांक 18 सितम्बर से 27 सितम्बर, 2004 तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सभी जैन मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के आयोजनों के माध्यम से महती धर्मप्रभावना हुई।

1. **जयपुर (राजस्थान जैन सभा) :** मनिहारों के रास्ते में स्थित श्री दिग. जैन बड़े दीवानजी के मंदिर में राजस्थान जैन सभा के तत्त्वावधान में श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के रात्रि में दशधर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुए तथा प्रवचनोपरान्त महाविद्यालय के छात्र वीरचन्द जैन, प्रशांत जैन व मृगेंद्र जैन के द्वारा प्रवचन पर आधारित प्रश्नमंच का आयोजन किया गया।

2. **जयपुर (तेरहपंथी दि. जैन बड़ा मंदिर) :** यहाँ पर भी पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के प्रात: श्रावक के 6 आवश्यक, देवदर्शन क्यों, साधना, समाधि व सिद्धि तथा समयसार के सार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ उपस्थित विशाल जनसमुदाय को मिला।

3. **जयपुर (आदर्शनगर) :** आदर्शनगर स्थित श्री मुलतान दि. जैन मंदिर में श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के प्रात: दशधर्म एवं रात्रि में समयसार के संवर अधिकार पर एवं पण्डित योगेशकुमारजी शास्त्री बरा के सच्चे देव के स्वरूप पर अध्यात्मगर्भित प्रवचन हुए।

4. **जयपुर (श्री टोडरमल स्मारक भवन) :** श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के तत्त्वावधान में प्रात: दशलक्षण विधान का आयोजन किया गया। गुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचन के पश्चात् पण्डित रमेशचन्दजी लवाणवाले सांगानेर का समयसार मंगलाचरण पर पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचनों के आधार पर अध्यात्मगर्भित सुश्राव्य प्रवचन हुए। दोपहर में श्रीमती कमलाजी भारिल्ल द्वारा रत्नकरण्डश्रावकाचार की कक्षा ली गई।

रात्रि में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के दशधर्म पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ उपस्थित छात्र एवं स्थानीय श्रोताओं को मिला। रात्रि के प्रवचन के पश्चात् प्रतिदिन श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के छात्र तथा श्री दि. जैन महिला मंडल बापूनगर द्वारा लघु नाटिका, प्रश्नमंच, एक मिनिट, कौन बनेगा ज्ञानवान आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

साहू रमेशचन्द जैन के निधन से जैन समाज की अपूरणीय क्षति

दिल्ली : भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई के अध्यक्ष, शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र महावीरजी प्रबंधकारिणी कमेटी के पदेन सदस्य, जैन समाज के प्रख्यात नेता साहू रमेशचन्दजी जैन का 79 वर्ष की आयु में दिनांक 22 सितम्बर 2004 को निधन हो गया।

आप अखिल भारतीय दि. जैन परिषद के अध्यक्ष, भारतीय ज्ञानपीठ के मैनेजिंग ट्रस्टी, भारतीय जन संचार संस्थान के अध्यक्ष, इंडियन न्यूजपेपर सोसायटी और प्रेस ट्रस्ट के अध्यक्ष व टाइम्स ऑफ इण्डिया ग्रुप ऑफ पब्लिकेशंस के लम्बे अर्से तक एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर भी रहे हैं। उनके निधन से सम्पूर्ण जैन समाज को गहरा आघात लगा है तथा उनके निधन का समाचार सुनते ही समस्त जैन समाज स्तब्ध रह गया।

5. **सूर्यनगर :** यहाँ के तारों की कूट दि. जैन मंदिर में पण्डित गुलाबचन्दजी जैन दुर्गापुरा के दशधर्म पर प्रवचन हुए तथा पण्डित संजीवकुमारजी शास्त्री खड़ैरी द्वारा छहढाला की कक्षा चलाई गई। पण्डित संजीवजी के द्वारा ही प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संचालन भी किया गया।

इसके अतिरिक्त जयपुर के उपनगरों में निम्न विद्वानों द्वारा दशधर्म पर प्रवचन हुए ह्न 6. **सिवाड बाकलीवाल जैन मंदिर (नमक मण्डी) :** पण्डित ताराचन्दजी सौगानी, 7. **मानसरोवर (मीरा मार्ग) :** डॉ. प्रभाकरजी सेठी जयपुर, 8. **सांगानेर (अलका नर्सिंग होम) :** पण्डित चिरंजीलालजी जैन। 9. **पार्श्वनाथ चैत्यालय बापूनगर :** पण्डित संजीवकुमारजी शास्त्री खड़ैरी, 10. **श्री महावीर दि. जैन पब्लिक स्कूल :** पण्डित श्रुतेशजी सातपुते शास्त्री, 11. **श्री महावीर सीनियर सैकण्डरी स्कूल :** पण्डित संजीवकुमारजी शास्त्री खड़ैरी,

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

16 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

गाथा–22

जीवा पुग्गलकाया आयासं अत्थिकाइया सेसा।
अमया अत्थित्तमया कारणभूदा हि लोगस्स।।22।।

(हरिगीत)

जीव–पुद्गल धरम–अधरम गगन अस्तिकाय सब।
अस्तित्वमय हैं अकृत कारणभूत हैं इस लोक के।।22।।

गाथा 21 में कह आये हैं कि अपने गुण पर्यायों सहित जीव संसरन करता हुआ भाव, अभाव, भावाभाव और अभावभाव को करता है।

अब आचार्य कुन्दकुन्ददेव प्रस्तुत 22वीं गाथा में कहते हैं कि जीव, पुद्गलकाय, आकाश और शेष दो अस्तिकाय अकृत हैं, अस्तित्वमय हैं और वास्तव में लोक के कारणभूत हैं।

इसी गाथा की टीका करते हुए आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि ह्न द्रव्य अकृत होने से, अस्तित्वमय होने से तथा लोक के कारण होने से जो छहद्रव्य स्वीकृत हो गये हैं, उनमें जीव, पुद्गल, आकाश, धर्म और अधर्म बहुप्रदेशी होने से अस्तिकाय हैं। कालद्रव्य के प्रदेश प्रचयात्मकता का अभाव है अत: वह अस्तिकाय नहीं है।

आचार्य जयसेन प्रश्नोत्तर के रूप में कहते हैं कि यदि ये अकृत हैं, किसी पुरुष विशेष के द्वारा बनाये नहीं गये हैं तो इनकी रचना कैसे हुई ? उत्तर में वे ही समाधान करते हैं कि अपने अस्तित्व से, अपनी सत्ता से रचित हैं और लोक के कारणभूत हैं। उत्पाद–व्यय–ध्रौव्य युक्त सत् हैं।

उपर्युक्त तीनों आचार्यों को आधार बनाते हुए गुरुदेवश्री कानजी स्वामी अपने प्रवचन में कहते हैं कि ह्न ''सर्वज्ञ परमात्मा ने लोक में जो छह द्रव्य देखे हैं, उनमें पाँच द्रव्य अस्तिकाय हैं और कालद्रव्य अस्तिकाय नहीं है। ये पाँचों द्रव्य अपने स्वयं की स्वभावगत योग्यता से कायवान हैं, किसी परद्रव्य के कारण नहीं और कालद्रव्य भी अपनी स्वभावगत योग्यता से अनादि से कायवान नहीं है।

ये छहों द्रव्य किसी के द्वारा निर्मित नहीं हैं, त्रिकाल अपने अस्तित्व से हैं। ये अपनी स्वभावगत योग्यता से ही स्वत: परिणमन करते हैं, कालद्रव्य निमित्तमात्र है। वह किसी को परिणमाता नहीं है, क्योंकि सभी द्रव्य अपने उत्पाद–व्यय–ध्रौव्य स्वभाव से स्वयं परिणमनशील हैं, स्वयं परिणमते द्रव्यों को अन्य के सहयोग की आवश्यकता ही नहीं है। आगम में कालद्रव्य को जो सभी द्रव्यों को परिणमाने की बात कही, वह कथन निमित्त अपेक्षा है, वास्तविक नहीं; क्योंकि निमित्त तो परद्रव्य के परिणमाने में अकिंचित्कर ही है।

इस गाथा में द्रव्यों को अकृत, अस्तित्वमय और लोक का कारणभूत कहा है। कारणभूत का अर्थ यह है कि जहाँ सभी द्रव्य हैं वही तो लोक है। विश्व की परिभाषा में भी यही कहा है कि छह द्रव्यों के समूह को ही विश्व कहते हैं।

कविवर हीरानन्दजी ने इस गाथा की व्याख्या काव्यमय भाषा में इसप्रकार की है। वे कहते हैं ह्न

दोहा

जीवपुग्गलकास फुनि, अस्तिकायका सेष।
अकृत अस्तिकाय लोककै, कारणरूप विसेष।।136।।

चौपई

जीव नाम पुग्गल आकासा, धरम अधर्म पंच परकासा।
एई अस्तिकाय अवधारै, अकृतकत्वगुन सदा समारै।।138।।
उपजै विनसै थिर नित पावैं, अस्तिरूप तातैं जिन गावैं।
सकल लोककै कारन मानै, लोकभाव इन बिन न पिछानै।।139।।
बहुत प्रदेस एकता काया, इनमैं बसै अनूपम छाया।
कालअनूमिल एक न हौंहि, काल काय न कहावत क्यौंही।।140।।

गाथा और उसकी टीकाओं के सम्पूर्ण कथन का तात्पर्य यह कि जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश ह्न ये पाँचों अस्तिकाय हैं, इन्हें किसी ने किया नहीं है, कराया नहीं है। ये अपने स्वभाव से ही अनादि–अनन्त सत्स्वरूप हैं। इन सभी में स्वभाव से ही अस्तिकाय नामक शक्ति है। ये जो नानारूप लोक दिखाई देता है, ये छहों द्रव्य ही इसके कारणरूप से विद्यमान हैं। कालद्रव्य को छोड़कर पाँचों द्रव्य प्रदेशपुंज होने से कायवान हैं, काल के मात्र एकप्रदेश है, अत: वह कायवान नहीं है। इन सबका स्वरूप ज्ञानियों के ज्ञान में अत्यन्त स्पष्ट होता है। ●

(पृष्ठ 3 का शेष....)

इन्द्र तो सम्यग्दृष्टि है, फिर भी वह आनंद इन्द्र को क्यों नहीं है ?

यहाँ आचार्यदेव जो इन्द्र के सुख की बात कर रहे हैं, वह इन्द्र के लौकिक सुख के संदर्भ में कर रहे हैं। यहाँ इन्द्र के सम्यग्दर्शनजन्य सुख की चर्चा नहीं है।

लोक में जिसे सुख कहते हैं, वह सांसारिक सुख है; परन्तु सम्यग्दर्शनजन्य जो सुख सौधर्म इन्द्र स्वर्ग में भोग रहा है, वही सुख श्रेणिक राजा नरक में भोग रहा है; लेकिन नरक में दु:ख तथा स्वर्ग में सुख ह्न ऐसा कहा जाता है, वह कथन लौकिक सुख–दु:ख की बात है; परंतु यहाँ तो मुनि की भूमिकावाले अतीन्द्रियसुख को लेना है।

विषयसामग्रीजनित सुख से अतीन्द्रियसुख अलग जाति का है। हमें जब सम्यग्दर्शन होगा, तब उस जाति का सुख ख्याल में आएगा; लेकिन अभी शास्त्र के आधार से तो यह निर्णय करना पड़ेगा कि वह सुख कोई अलग जाति का है, जिसे हम व्यवहार से मोक्ष का श्रद्धान कहते हैं।

जैसे अतीन्द्रियज्ञान इन्द्रियज्ञान से अलग है, फिर भी वे दोनों ज्ञान का उल्लंघन नहीं करते हैं; वैसे ही इन्द्रियसुख और अतीन्द्रियसुख दोनों सुखगुण की पर्यायें हैं, सुखगुण का उल्लंघन नहीं करती हैं।

इसी न्याय से सुखगुण की जो पर्याय दु:खरूप है, उसे भी सुख कह सकते हैं; क्योंकि वह सुखगुण की पर्याय है। ज्ञानगुण की पर्याय को ज्ञान भी कहते हैं और अज्ञान भी कहते हैं। वैसे ही सुखगुण की पर्याय को सुख भी कहते हैं और दु:ख भी कहते हैं। सुखगुण की अतीन्द्रियसुखरूप पर्याय इन्द्रियसुख से जुदी जाति की है।

वह अतीन्द्रियसुख ही वास्तविक सुख है ह्न यही सुखाधिकार में कहा है।

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार

14

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

'इन्द्रियज्ञान ज्ञान नहीं है' यदि यह सर्वथा सत्य हो तो वह हेय है ह्न ऐसा कैसे कहा जा सकता है ? वह छोड़नेयोग्य है ह्न इसका अर्थ यह है कि उसकी सत्ता तो है; लेकिन वह किसी काम का नहीं है। एक छंद आता है ह्न

परखा माणिक मोतियाँ, परखा हेम कपूर।
यदि आतम जाना नहीं, जो जाना सब धूल।।

यदि आत्मा को नहीं परखा और किसी को भी परखा, तो कुछ परखा ही नहीं है, जाना ही नहीं है; वह जानना बेकार है; क्योंकि वह किसी प्रयोजन का नहीं है।

यहाँ आचार्य कहते हैं कि इन्द्रियज्ञानवाले को इन्द्रियसुख की तथा अतीन्द्रियज्ञानवाले को अतीन्द्रियसुख की प्राप्ति होती है।

जिस शुद्धोपयोग के फल में केवलज्ञान की प्राप्ति होती है; उसी शुद्धोपयोग के फल में अतीन्द्रिय आनन्द की भी प्राप्ति होती है।

जादं सयं समंतं णाणमणंतत्थवित्थडं विमलं।
रहिदं तु ओग्गहादिहिं सुहं ति एगंतियं भणिदं।।59।।

(हरिगीत)

स्वयं से सर्वांग से सर्वार्थग्राही मलरहित।
अवग्रहादि विरहित ज्ञान ही सुख कहा जिनवरदेव ने।।

स्वयं से उत्पन्न, समंत, अनन्त पदार्थों में विस्तृत, निर्मल और अवग्रहादि से रहित ज्ञान एकान्तिक सुख है ह्न ऐसा सर्वज्ञदेव ने कहा है।

यहाँ एकान्तिक से तात्पर्य वास्तविक से है। ज्ञानाधिकार समाप्त होने के बाद सुखाधिकार की 7-8 गाथाएँ हो जाने पर भी आचार्य यहाँ ज्ञान की ही महिमा गा रहे हैं।

अवग्रहादिक से रहित अतीन्द्रिय ज्ञान के साथ में जो सुख उत्पन्न हुआ है; वह सुख एकान्तिक सुख है अर्थात् वास्तविक सुख है।

सिद्धों के अतीन्द्रियसुख की अपेक्षा इन्द्रियसुख दु:ख ही है। अत: संसारीजीव दु:खी ही हैं। पुण्य के उदय से प्राप्त होनेवाली अनुकूलता को सुख मानो तो हम संसारीजीवों को भी सुखी कह सकते हैं।

सर्वज्ञ का ज्ञान अवग्रहादिक से रहित है। जो स्वयं पैदा हुआ है अर्थात् इन्द्रियादिक की सहायता से उत्पन्न नहीं हुआ है, गुरु-पुस्तकादिक से उत्पन्न नहीं हुआ है, जिसमें पर के सहयोग की रंचमात्र भी आवश्यकता नहीं है ह्न ऐसा ज्ञान अतीन्द्रियज्ञान है। जिसप्रकार आँख पीछे का नहीं देख सकती है ह्न केवलज्ञान उसप्रकार नहीं है। केवलज्ञान में तो सर्वांग प्रदेशों से एक-सा दिखता है।

केवलज्ञानी अरहंत भगवान के आँख और कान अपने से बढ़िया होते हैं, वज्र की चोट से भी खराब नहीं होते। कहने का आशय यह है कि उनकी आँखें तो बढ़िया हैं; लेकिन वे आँखों से देखते ही नहीं हैं। वे चारों तरफ से आत्मप्रदेशों से ही देखते हैं। उनका ज्ञान अवग्रहादिक से रहित अत्यंत निर्मल है। ऐसे जीवों को जो सुख है, वह एकान्त से सुख ही है, उसमें कथंचित् नहीं लगता है। कथंचित् सुख व कथंचित् दु:ख ह्न ऐसा भेद उसमें नहीं है।

छहढाला में भी तीसरी ढाल के प्रथम छन्द में अतीन्द्रियसुख के बारे में लिखा है कि ह्न

'आकुलता शिवमांहि न तातै, शिवमग लाग्यो चहिए।'

आकुलता मोक्ष में नहीं है; अत: मोक्षमार्ग में लगना चाहिए।

यहाँ ऐसे ही सुख की चर्चा है।

जं केवलं ति णाणं तं सोक्खं परिणमं च सो चेव।
खेदो तस्स ण भणिदो जम्हा घादी खयं जादा।।60।।

(हरिगीत)

अरे केवलज्ञान सुख परिणाममय जिनवर कहा।
क्षय हो गये हैं घातिया रे खेद भी उसके नहीं।।

जो 'केवल' नामक ज्ञान है – केवलज्ञान है, वही सुख है, वही परिणाम है; क्योंकि उनके घातिकर्म क्षय को प्राप्त हुये हैं; अत: उन्हें खेद नहीं कहा गया है।

आप में 25 किलो वजन ले जाने की ताकत है। यदि आपको 50 किलो ले जाने के लिए कहेंगे तो खेद हो जाएगा। आपमें जितनी जानने की शक्ति है; उतना जानेंगे तो बिना खेद के जानेंगे। आपमें एक दिन में 10 गाथा याद करने की शक्ति है तो बिना खेद के याद करेंगे; परन्तु 20 गाथा याद करने के लिए कहेंगे तो खेद हो जाएगा।

अब आचार्यदेव अनन्तवीर्य की चर्चा करते हैं। केवलज्ञान के लिए जो कीमत चुकाई है, उसी में अनंतसुख व अनंतवीर्य भी मिल गया।

अनंतसुख को भोगते हैं, अनंतज्ञेयों को जानते हैं; पर उन्हें खेद नहीं होता, थकान नहीं होती। भगवान पसीना से रहित हैं; क्योंकि पसीना श्रम की निशानी है, खेद व थकावट की निशानी है। पसीना का दूसरा नाम श्रमजल है। भगवान के लिए 'श्रमजलरहित' कहा गया है।

इसलिए आचार्य कहते हैं कि जो केवल नाम का ज्ञान है, वही सुख है, उससे भिन्न सुख नहीं है; परिणाम भी वही है। कहने का आशय यह है कि अनंतसुख में किसीप्रकार का खेद नहीं होता है। उस अतीन्द्रियसुख का स्वरूप जानना जरूरी है।

जैसे केवलज्ञानी के ज्ञान को हम अपने ज्ञान से नापते हैं; वैसे ही उनके सुख को भी हम अपने सुख से नापते हैं।

टोडरमलजी ने मोक्षमार्गप्रकाशक में मोक्षतत्त्व की भूल के प्रकरण में यही बात बताई है कि अज्ञानी कहता है कि जितना सुख हमें है, उससे अनंतगुणा सुख मोक्ष में है। इसप्रकार वह वर्तमान में जो इन्द्रियजन्य सुख है, उससे गुणनफल लगाता है। मुझे यहाँ एक पत्नी का सुख है तो वहाँ पर अनन्त पत्नियाँ होंगी। यहाँ पर दो रोटियों का सुख है तो वहाँ पर अनंत रोटियों का सुख होगा। इसप्रकार इसने जिस-जिस भोग सामग्री में सुख की कल्पना कर रखी है; उस-उससे गुणनफल लगाता है।

अरे भाई ! तुम्हारे पास जो है, उससे ही तो तुम गुणनफल करोगे। इसलिए कहते हैं कि तुम ऐसा गुणनफल मत करो; क्योंकि अतीन्द्रियसुख की जाति ही जुदी है।

उसकी महिमा बताने के लिए ऐसा कहा; क्योंकि महिमा तो जिससे परिचित होते हैं, उससे ही की जाती है।

सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि में यही तो फर्क है। सम्यग्दृष्टि ने उस मोक्ष के सुख का स्वाद लिया है, भले ही वह अनंतवाँ भाग चखा हो।

छहढाला में कहा है कि ह्न

'यों चिन्त्य निज में थिर भये, तिन अकथ जो आनंद लह्यो।
सो इन्द्र नाग नरेन्द्र वा, अहमिन्द्र कैं नाहीं कह्यो।'

इसप्रकार चिन्तवन करके आत्मस्वरूप में लीन होने पर उन मुनियों को जो कहा न जा सके ह्न ऐसा वचन से पार आनन्द होता है; वह आनन्द इन्द्र को, नागेन्द्र को, चक्रवर्ती को या अहमिन्द्र को भी नहीं होता। (छठवीं ढाल, 11वाँ छंद) **(शेष पृष्ठ 2 पर)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

पाठशाला निरीक्षण सम्पन्न

जयपुर : श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के भूतपूर्व छात्र पण्डित अनिलकुमारजी बेलोकर शास्त्री द्वारा राजस्थान में बून्दी, बांरा, तथा मध्यप्रदेश में राधौगढ़, अशोकनगर, आरोन, गुना, बदरवास, लुकवासा, कोलारस, अकाझिरी, खनियांधाना आदि स्थानों पर श्री वीतराग-विज्ञान पाठशालाओं का निरीक्षण कर पाठशाला संचालन हेतु उचित निर्देशन दिया गया। प्रत्येक स्थान पर पण्डितजी के प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ भी समाज को प्राप्त हुआ। **ह्न ओमप्रकाश आचार्य, प्रबंधक**

रविवारीय गोष्ठियाँ सम्पन्न

जयपुर : श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय, जयपुर में प्रत्येक रविवार को आयोजित की जानेवाली गोष्ठी के अंतर्गत दिनांक 21 अगस्त 2004 को षष्ठम् रविवारीय गोष्ठी का आयोजन किया गया; जिसमें 'णमोकार महामंत्र एक अनुचिंतन' विषय रखा गया। पं. प्रवीणकुमारजी शास्त्री ने गोष्ठी की अध्यक्षता की तथा पं. रवीन्द्र काले शास्त्री ने संचालन तथा देवेन्द्र जैन द्वारा संयोजन किया गया। सुमित जैन एवं शैलेन्द्र जैन सर्वश्रेष्ठ वक्ता चुना गया।

दिनांक 29 अगस्त 2004 को सप्तम रविवारीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। पं. विमलकुमारजी शास्त्री गोष्ठी के अध्यक्ष थे। चैतन्यप्रकाश जैन तथा जितेन्द्र चौगुले श्रेष्ठ वक्ता चुने गये। संचालन अश्विन नानावटी ने तथा संयोजन अनेकान्त जैन ने किया।

दिनांक 5 सितम्बर 2004 को अष्टम गोष्ठी का आयोजन हुआ; जिसकी अध्यक्षता बुद्धिप्रकाशजी भास्कर ने की। संचालन देवेन्द्र जैन ने किया तथा राहुल जैन संयोजक थे। भरत जैन तथा शाकुल जैन को सर्वश्रेष्ठ वक्ता के रूप में चुना गया।

महाराष्ट्र में धर्मप्रभावना

नागपुर : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा नागपुर द्वारा संचालित महाराष्ट्र प्रान्त तत्त्वप्रचार-प्रसार योजना के अन्तर्गत श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय जयपुर के स्नातक पण्डित सुनीलकुमारजी बेलोकर शास्त्री सुलतानपुर द्वारा महाराष्ट्र के वाशिम, हिंगोली, रिसोड, वाढोणा, फालेगांव, सेनगांव, डासाला, रिठद आदि स्थानों पर जाकर प्रत्येक नगर में प्रवचन, प्रौढ कक्षा, बाल कक्षा, विधान पूजा, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि कार्यक्रमों के माध्यम से धर्मप्रभावना की।

अनेक स्थानों पर पंचपरमेष्ठी और शांति विधान पूजा का आयोजन भी किया गया। समाज ने इस महान ज्ञानयज्ञ का उत्साह के साथ स्वागत किया। **ह्न विश्वलोचन जैनी, नागपुर**

सभी पाठकों को सूचित किया जाता है कि प्रबंध संपादक पर्वाधिराज पर्यूषण पर्व में प्रवचनार्थ बाहर जाने के कारण प्रस्तुत अंक 4 पृष्ठों का ही प्रकाशित किया जा रहा है। आगामी अंक में पूर्यषण पर्व के विस्तृत समाचार प्रकाशित किये जायेंगे। ***ह्न सम्पादक***

निर्मलकुमार ठोलिया राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित

एलोरा : श्री गुरुदेव समन्तभद्र विद्या मन्दिर हाईस्कूल, एलोरा के प्रधानाध्यापक श्री निर्मलकुमार चम्पालाल ठोलिया शिक्षक दिन के शुभ अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के करकमलों से आदर्श शिक्षक के रूप में सम्मानित हुए।

आपने अपनी विद्यालयीन शिक्षा श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल एलोरा में ही पूरी की तथा इसी प्रशाला में आज आप प्रधानाध्यापक हैं। आप परिश्रमी एवं दयालू स्वभाव के हैं। **ह्न गुलाबचन्द बोरालकर**

(पृष्ठ 1 का शेष...)

12. श्री महावीर दिगम्बर जैन स्कूल (नगर विभाग) : पण्डित मनोजजी शास्त्री खड़ैरी, **13. कमला नेहरु नगर :** पण्डित जितेन्द्रसिंह यादव शास्त्री।

कोलकाता : यहाँ पर श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में श्री दि. जैन मन्दिर पद्मपुकुर रोड, भवनीपुर में प्रात: गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् प्रतिदिन पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री अलीगढ के प्रात: एवं रात्रि के विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुए। दिनांक 27 सितम्बर को श्री वासुपूज्य स्वामी का निर्वाण लड्डू चढाकर निर्वाण कल्याणक भी मनाया गया।

साधना चैनल पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का समय बदला

साधना चैनल पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन दिनांक 28 सितम्बर 2004 से सोमवार से शनिवार प्रात: 6.45 तथा रविवार को दोपहर 2.30 बजे प्रसारित किये जायेंगे। यदि आपके गांव/शहर में साधना चैनल न आता हो तो अपने केबल ऑपरेटर से कहकर प्रारंभ करावें। कोई कठिनाई होने पर श्री पंकज जैन (साधना चैनल) से 011-32106419 नम्बर पर सम्पर्क करें।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अक्टूबर (प्रथम), 2004
J. P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास ❊ **पं. जितेन्द्र वि.राठी शास्त्री**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127